प्रारंभिक कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश के संभल, बुलंदशहर, हरदोई, वाराणसी, बिहार के वैशाली व भागलपुर एवं पश्चिम बंगाल के हुगली जैसे पानी की कमी वाले गंगा बेसिन के जिलों में प्रारंभिक सर्वेक्षण कर आठ आर्द्रभूमि स्थलों एवं शहरी जल निकायों की पहचान की गई। आर्द्रभूमि में प्रत्यक्ष प्रदूषण, जैव विविधता, सामाजिक– आर्थिक महत्व का आकलन करके पुनर्स्थापन (रेस्टोरेशन) कार्य शुरू किया गया है। इनमें प्राकृतिक एवं मानव निर्मित दोनों ही प्रकार की आर्द्रभूमि शामिल हैं, जैसे काशीपुर तालाब, संभल; बिलौना आर्द्रभूमि, बुलन्दशहर; काकराखेड़ा आर्द्रभूमि, हरदोई; उगापुर आर्द्रभूमि, वाराणसी; नेपाली धाम आर्द्रभूमि, वाराणसी; बरैला आर्द्रभूमि, वैशाली; जगतपुर आर्द्रभूमि, भागलपुर; दाहा बील, हुगली आदि। स्थानीय समुदाय गंगा प्रहरी की भागीदारी ने सरकार के जन आंदोलन के अनुरूप आर्द्रभूमि और जल संरक्षण के कार्यों को गति प्रदान की है। यह माना जा रहा है कि अन्य हितधारक भी देश में आर्द्रभूमि व जल संरक्षण के कार्यों के लिये ऐसे ही पहल करेंगें।

भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा कार्यक्रम में सहयोग करने के लिये गंगा प्रहरी, शहरी निकायों, जिला प्रशासन, वन विभाग, मंदिर समिति और गंगा टास्क फोर्स जैसे संगठनों को शामिल किया जा रहा है। ये सभी हितधारक मिलकर जल शक्ति मंत्रालय की जल संरक्षण को जल आन्दोलन बनाने की पहल को पूरा करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। शुरूआत में यह कार्यक्रम एक सप्ताह, गंगा के किनारे वाले क्षेत्रों में आयोजित किया जायेगा, जो धीरे धीरे गंगा बेसिन में विस्तारित किया जायेगा।

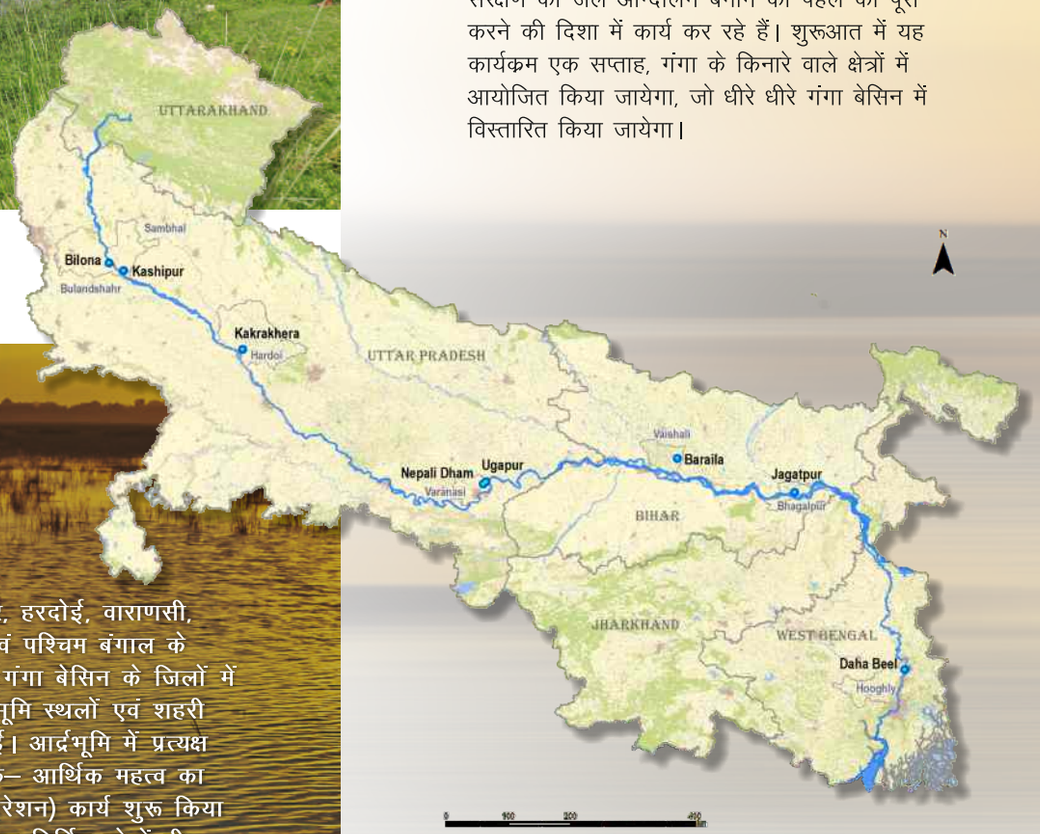

For more information, please contact:

NMCG
National Mission for Clean Ganga,
Ministry of Water Resources,
DoWR, RD & GR
Major Dhyan Chand National Stadium,
India Gate, New Delhi- 110001
csractivity@nmcg.nic.in

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre
Wildlife Institute of India,
Chandrabani,
Dehradun- 248001
nmcg@wii.gov.in

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga

XPRESSIONS: 9219552563 | Doc No. XPS030819036

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

नमामि गंगे

आर्द्रभूमि एवं जल कार्यक्रम

गंगा बेसिन में आर्द्रभूमि पुनर्स्थापन, जैव विविधता और जल संरक्षण के लिये राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान की पहल

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

आर्द्रभूमि (वेटलैंड) स्थलीय एंव जलीय प्रणालियों के बीच ऐसी भूमि होती है जहां जलस्तर आमतौर पर सतह पर या उसके पास होता है। आर्द्रभूमि ऐसे पारिस्थितिकीय तंत्र (ईकोसिस्टम्स) हैं जिनमें आमतौर पर पानी का भंडार, पौधों एवं जीवों की अनेक प्रजातियां शामिल हैं। आर्द्रभूमि के भौतिक, जैविक और रासायनिक घटकों जैसे – मिट्टी, पानी, पौधों एवं जंतुओं की परस्पर क्रिया, कई महत्वपूर्ण कार्यों जैसे प्रदूषित जल को फिल्टर करना, भूजल पुनर्भरण (ग्राउंड वाटर रिचार्ज), बाढ़ की रोकथाम एवं जैव विविधता को संबल प्रदान करने में सक्षम बनाती है। नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस जैसे अपशिष्टों को अवशोषित करने के कारण आर्द्रभूमि को "भू–परिदृश्य के गुर्दे" भी कहा जाता है।

जल सुरक्षा सदी की महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है और सतत विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल) में निहित है, जो वर्ष २०३० तक सभी के लिये पानी की उपलब्धता एवं सतत प्रबंधन की परिकल्पना करता है। वर्तमान में पानी की कमी वाले राष्ट्रों में नामांकित भारत, विश्व के ४ प्रतिशत मीठे जल के संसाधनों के साथ विश्व की १७ प्रतिशत आबादी का पोषण करने की चुनौती का सामना कर रहा है।

जल शक्ति मंत्रालय का उद्देश्य १ जुलाई २०१६ को प्रारम्भ किये गये जल शक्ति अभियान के माध्यम से समग्र एवं एकीकृत दृष्टिकोण के साथ पानी के मुद्दों को सुलझाना है। जलशक्ति अभियान माननीय प्रधानमंत्री जी के जल संचय पर बल देने के दृष्टिकोण से प्रेरित, समयबद्ध, मिशन मोड में संचालित जल संरक्षण अभियान है जिसमें जल संरक्षण, पुनर्भरण एवं जल के पुनः उपयोग (रियूज) के प्रयास "संचय जल, बेहतर कल" की थीम के साथ किये जायेंगें। जल शक्ति अभियान का आरम्भ, जल शक्ति मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की जल संबंधी योजनाओं के समन्वय से किया जा रहा है।

जल शक्ति अभियान देश भर में पानी की कमी वाले (वाटर स्ट्रेस्ड) २५५ जिलों में चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा गंगा बेसिन में आर्द्रभूमि की बहाली के माध्यम से भूजल पुनर्भरण का कार्य किया जा रहा है। यह कार्यक्रम जलभरों (एक्विफर्स) में जल पुनर्भरण के माध्यम से गंगा नदी के जल स्तर को बढ़ायेगा।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने भारतीय वन्यजीव संस्थान के सहयोग से "आर्द्रभूमि एवं जल संरक्षण कार्यक्रम" की शुरूआत प्रारंभिक स्तर पर की है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी एवं कम लागत में उच्च पारिस्थितिकीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व के आर्द्रभूमि स्थलों को बहाल करना है। कार्यक्रम निम्नलिखित व्यापक उद्देश्यों के साथ शुरू किया गया है :

- आर्द्रभूमि में जल के प्रवेश एवं निकास स्थान की सफाई और गाद को हटाना।
- ठोस अपशिष्ट का निवारण।
- प्रमुख जलीय प्रजातियों के लिये आवास संवर्द्धन।
- आक्रमणशील प्रजातियों का निवारण।
- पोषक तत्वों के अंतर्वाह (इनफ्लो) को रोकने के लिये पौधारोपण।
- आर्द्रभूमि एवं जल संरक्षण में जनसमुदाय की भागीदारी।

तत्पश्चात चयनित आर्दभूमियों के लिए एक सम्पूर्ण पुनर्स्थापन योजना बनाई जायेगी जिसका क्रियान्वयन साझेदारों (स्टेकहोल्डर) की सहभागिता से आर्द्रभूमि एवं जल संरक्षण के लिए किया जायेगा।

गंगा बेसिन में छोटी बड़ी कई विशिष्ट आर्द्रभूमि हैं। यह आर्द्रभूमि पानी के स्तर को बनाये रखने के साथ ही नदी के मुख्य धारा में प्रवाह को बनाये रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्य नदी और आर्द्रभूमि के बीच पानी, तलछट (सेडीमेंट्स), पोषक तत्वों एवं जीव प्रजातियों का आदान प्रदान जैव विविधता एवं पारिस्थितिकीय तंत्र सेवाओं के मूल्यों (ईकोसिस्टम सर्विसेज) के बीच एक पारस्परिक प्रणाली विकसित करता है। आर्द्रभूमि द्वारा सम्पादित किये गये कार्यों में मानव समाज के लिये पानी का प्रावधान करना सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, जिससे जल सुरक्षा में योगदान होता है।